सीमा-पार व्यापार क्रेडिट : आर्थिक संकट के बाद भारत से संबंधित अनुभवजन्य विश्लेषण

इस पेपर में भारतीय आयातकों को घरेलू और विदेशी बैंकों द्वारा दिए जाने वाले व्यापार क्रेडिट के आकार, संघटन और लागत पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसका लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए 2007-08 की पहली तिमाही से लेकर 2016-17 की चौथी तिमाही तक के लिए 55 बैंकों के पैनल डाटा का प्रयोग करते हुए, यह पेपर इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि व्यापार क्रेडिट के प्रवाह को मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों से जुड़े कारक प्रभावित करते हैं।

इस पेपर में दर्शाया गया है कि आयात में वृद्धि – चाहे यह बढ़ी हुई कीमतों के कारण हो, या बढ़ी हुई मात्रा के कारण हो – के परिणामस्वरूप व्यापार क्रेडिट बढ़ता है। आपूर्ति पक्ष की दृष्टि से देखें तो बैंकों की वित्तीय सेहत, व्यापार क्रेडिट की लागत और उनका समुद्रपारीय नेटवर्क का आकार उनके व्यापार क्रेडिट परिचालनों को प्रभावित करता दिखाई पड़ता है। इस पेपर के अनुभवजन्य निष्कर्ष इस ओर इशारा करते हैं कि बैंकों को चाहिए कि वे अपने वैश्विक बैंकिंग संबंधों में विस्तार करें और देशी लिखतों (अर्थात एलओयू/एलओसी) में कारोबार से आगे बढ़ते हुए वैश्विक रूप में स्वीकृत व्यापार वित्त लिखतों में कारोबार करें, हालांकि इससे लागत बढ़ेगी।